

भँवर पुं. (तद्.) 1. भौरा, भ्रमर 2. जलावर्त 3. गड्ढा, गर्त 4. काला घोड़ा।

भँवर जाल पुं. (तद्.) 1. सांसारिक झंझट, भ्रमजाल 2. नदी आदि में भँवर का चक्कर 3 झंझट, बखेड़ा।

भँवरी स्त्री. (तद्.) 1. जल का चक्कर, भँवर 2. मादा भौरा, भ्रमरी, भौरी 3. सिर या दाढ़ी के बालों या पशुओं की पीठ आदि के बालों में सकेन्द्र घुमाव या घुँघरालापन, भौवर, अग्नि परिक्रमा 4. गश्त 5. घूम-घूम कर कोई काम पुनः-पुनः करना या सौदा बेचना।

भ पुं. (तत्.) 1. शुक्र (ग्रह) 2. नक्षत्र 3. राशि 4. सूर्य 5. तारा, तारों का समूह 6. मधुमक्खी 7. भ्रम, भ्रांति 8. भ्रमर, भौरा, भैरव।

भक पुं. (देश.) 1. एक दम से होने वाली चमक या जलने की क्रिया या धुँआ निकलना या भभकना 2. सहसा अथवा रह-रहकर आग के जल उठने का शब्द।

भकभकाना अ.क्रि. (देश.) भक-भक शब्द करके जलना या रह-रहकर चमकना।

भकसना अ.क्रि. (देश.) अधिक समय तक खाद्य पदार्थ के पड़े रहने से उसका खट्टा या बदबूदार हो जाना या सड़ना।

भकुआ वि. (देश.) 1. भकुवा, मूढ़, मूर्ख, हत बुद्धि, जिसको अक्ल न हो या जिसकी सोच गुम हो गई हो 2. व्याकुल, बहुत घबराया हुआ, अति आशंकित।

भकूट पुं. (तत्.) ज्यो. राशियों का एक समूह, जिससे जन्मकुंडली के अनुसार विवाह के संयोग में वर और कन्या के शुभाशुभ की गणना की जाती है।

भकोसना स.क्रि. (देश.) जल्दी-जल्दी खाना, ठूस ठूस कर खाना, ठूसना, भददेपन/बेसब्री या अशिष्ट रीति से खाना, निगलना।

भक्त वि. (तत्.) 1. अनुरागी, वफादार, अनुगत 2. उपासक, आराधक, भक्तिभाव रखने वाला, भक्ति करने वाला, भक्ति युक्त 3. बाँटा हुआ, विभाजित 4. चाहा हुआ 5. पूजित 6. पकाया हुआ चावल, भात।

भक्तवत्सल वि. (तत्.) 1. भक्त को प्यार करने वाला, भक्त के प्रति स्नेह युक्त 2. भक्तों पर कृपा करने वाला पुं. विष्णु।

भक्तशिरोमणि पुं. (तत्.) भक्तों में उत्तम श्रेणी का, भक्तों में शीर्षस्थ/श्रेष्ठ।

भक्ति स्त्री. (तत्.) 1. विभाजन, बँटवारा, बाँट, 2. सेवा, आराधना 3 ईश्वर या पूज्य व्यक्ति के प्रति अत्यधिक अनुराग या श्रद्धा, उपासना, आराधना 4. एक छंद का नाम।

भक्तिभाजन वि. (तत्.) भक्ति के योग्य, भक्ति करने का अधिकारी, भक्ति का पात्र।

भक्तिभाव पुं. (तत्.) 1. ईश्वर या किसी पूज्य व्यक्ति के प्रति अत्यधिक श्रद्धा 2. अनुराग या आराधना का भाव 3. भक्ति की अखंड चित्त वृत्ति 4. भक्ति रस का स्थायी भाव।

भक्तिरस पुं. (तत्.) ईश्वर के प्रति उत्कट अनुराग और उससे प्राप्त आनंद काव्य. में एक रस का नाम।

भक्ति सूत्र पुं. (तत्.) 1. महर्षि शांडिल्य एवं नारद आदि द्वारा रचित भक्ति के प्रतिपादक सूत्र-ग्रंथ 2. परमात्मा की भक्ति का प्रतिपादक कोई सूत्र।

भक्षक वि. (तत्.) 1. खाने वाला, भक्षण करने वाला, पेटू, खाऊ 2. किसी प्राणी विशेष को खा जाने वाला।

भक्षण पुं. (तत्.) 1. खाने या भोजन करने की क्रिया या भाव, दाँतों से काटकर खाना, आहार।

भक्षण भीति स्त्री. (तत्.) भोजन के प्रति असामान्य भीरुता, खाने से अत्यधिक डर।

भक्षपोषी वि. (तत्.) जो भक्षण द्वारा पोषित हो।

भक्षी वि. (तत्.) खाने वाला, भक्षक।